किशन पौडेल

ई—मेल-krishna5064@gmail.com

स्वाभिमान

उसे ऊपर पहुँचना था। उसने एक आशाजनक चाकरी की सीढ़ी देखी। अपना सिर झुकाकर बोला—"प्रभु! मेरे लिए अवसर का द्वार खोल दीजिए।"

"ठीक है ऊपर चढ़ लो ।" उसे मालिक का आशीर्वाद मिल गया ।

वह अपने विवेक पर लगाम लगाकर एक सीढ़ी ऊपर चढ़ गया। ऊपर उसने मीठे अंगूरों का एक गुच्छा देखा और लालच का लम्बा हाथ बढ़ाकर कहा—"जनाब मुझे उपर तक पहुँचना है!"

"पकड़ लो हाथ।"

उसने चापलूसी की रस्सी पकड़ी और ऊपर चढ़ गया। ऊपर जाकर वह जीवन के रंगबिरंगे सपने देखने लगा। ऊँची उड़ान भरने की चाहत में अपने महत्वाकांक्षी पंखों को फड़फड़ाते हुए बोला—"महोदय! मुझे शिखर पर पहुँचना है, कृपा करें।"

"बेशक!" उसे आशीर्वाद मिला।

वह अपनी निष्ठा को रौंदते हुए शिखर पर पहुँच गया। वहाँ उस जैसे अवसरवादी अपनी नैतिकता को दाँव पर लगा रहे थे। उसने पूछा—"मालिक, अब मैं क्या करूँ?"

"दे दो बलिदान।"

उसने अपनी नैतिकता का बलिदान किया और अवसर की खिड़की से अन्दर कदम रखकर ईमान का दरवाजा बन्द कर लिया। ऊँचे शीशमहल के भीतर धीरे-धीरे उतरते हुए उसने शीशे में अपना चेहरा देखा। स्वाभिमान का सिर नहीं था।

हिन्दी अनुवाद : स्वयं लेखक द्वारा

हेटौंडा, नेपाल के रहने वाले किशन पौडेल साहित्य की विविध विधाओं में लिखते आ रहे हैं; परन्तु लघुकथा में विशेष दखल रखते हैं । 'अंतदृष्टि' नाम से उनका एक लघुकथा संग्रह हिन्दी भाषा के साथ-साथ नेपाली भाषा में भी प्रकाशित हुआ है। उससे पहले नेपाली भाषा में उनका लघुकथा संग्रह 'खुशी' प्रकाशित हो चुका था । फिलहाल मातृभूमि साहित्य समाज से जुड़े हूए हैं। प्रस्तुत लघुकथा उनके लघुकथा संग्रह 'अंतदृष्टि' से ली गयी है।